राष्ट्रभाषा हिंदी : कल आज और कल

राष्ट्रभाषा हिंदी के कल, आज और कल का मतलब हिंदी का अतीत, वर्तमान और भविष्य है। भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों , संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक , संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल , सहज और सुगम भाषा होने के साथ ही हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

भारतवर्ष की प्रमुख भाषा हिंदी का उद्भव और विकास संस्कृत से माना जाता है। परंतु संस्कृत से हिंदी तक कि विकास यात्रा में कई तरह के परिवर्तन आते रहे। हिंदी शब्द पहले स्थानवाची था बाद में भाषावाची बन गया क्योंकि संस्कृत का ' स 'फारसी में ' ह 'होने के कारण सिंधु, सिंध और सिंधी , फारसी में हिंदू , हिंद और हिंदी हो गया।

अंग्रेजी का गुणगान करने वालों को शायद यह मालूम नहीं कि आज से लगभग 800 वर्ष पूर्व 13 वीं शताब्दी तक विश्व में अंग्रेजी नाम की कोई भाषा ही नहीं थी,अंग्रेजी के जन्म से 400 वर्ष पूर्व ही हिंदी भाषा ने अपने साहित्यिक इतिहास का 'वीरगाथा काल ' समाप्त करके 'भक्ति काल' में प्रवेश कर लिया था। पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो और पद्मावत आदि महाकाव्य लिखे जा चुके थे । रामायण , महाभारत तथा पौराणिक कथाओं के अतिरिक्त भारत के लोक नायकों के प्रेम, विरह और शौर्य की गाथाएं जमाने से प्रचलित हैं जो इस बात की पूरक हैं कि हिंदी का इतिहास बेहद गौरवशाली रहा है।

जब हम राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को देखते हैं तब हमें पता लगता है कि 14 सितंबर 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 की धारा के अधीन हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित कर दी गई। यानी कि राज्य के कामकाज की भाषा । भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है जबकि हिंदी यहां के सर्वाधिक जनसंख्या द्वारा बोली और समझी जाती है। महात्मा गांधी जी का कहना था कि -"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है "। हिंदी को दक्षिण भारत के लोग राष्ट्रभाषा बनाने के खिलाफ थे और कई विरोध प्रदर्शन भी हुए। यह विडंबना है कि राजनीति तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा अभी तक नहीं मिला।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध पंक्ति है " निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल , बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के शूल।। " यानी मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना भी मुश्किल है।

वर्तमान समय में हिंदी की पकड़ विश्व स्तर पर हो गई है अब विश्व के विश्वविद्यालयों में भी हिंदी ने अपना स्थान बना लिया है। विश्व की कंपनियों को भी पता लग गया है कि भारत के साथ व्यापार करना है तो हिंदी भाषा के साथ ही यह संभव है। विश्व में हिंदी साहित्य की मांग बढ़ गई है। हिंदी फिल्मों का प्रचलन भी बढ़ गया है । आज दुनिया भर के लोग हिंदी फिल्मों के दीवाने हैं।

हिंदी भाषा का भविष्य यानि कल के संदर्भ में देखें तो हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि तकनीकी क्षेत्र में हिंदी ने अपनी जड़े जमा ली है। लोगों का रुझान हिंदी की तरफ बढ़ गया है। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में हिंदी जल्द ही राष्ट्रभाषा तक का सफर भी पूरा कर लेगी। हिंदी अतः राष्ट्रभाषा हिंदी का कल, आज और कल गौरवशली था , गौरवशाली है और आगे भी गौरवशाली ही रहेगा।

नाम: शर्मीन निजामुद्दीन मलिक

क्लास: स्नातकोत्तर, प्रथम वर्ष